अथ पश्चिम दिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा

(चौपाई)

नन्दीश्वर पच्छिम दिस जोय। त्रयोदश जिन मन्दिर हैं सोय।
तहाँ जान तौ समरथ नाहिं। यहाँ थापन कर जजौं सुठाहिं।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(चौपाई)

नीको नीर निरमलो सार। निरमल पातर करमें धार।
नन्दीश्वर पच्छिम दिस जान। पूजों जिन मन्दिर जल आन।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन चारु अगर घसि और। कनक पियाले धर कर जोर।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं जजौं गंध शुभ आन।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत मुक्ताफल से सार। उज्ज्वल खण्ड रहित कर धार।
नन्दीश्वर पच्छिम दिस जान। जिन थल पूजौं अक्षत आन।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि०

फूल कलपतरु से गन्ध धार। नाना वरन आदि कर सार।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। पूजौं फूल थकी हित आन।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रस नैवेद बनाय। तुरत किए लायो थुति गाय।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो पूजौं नैवेद सुआन।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक रतन मई तम हरा। सो हमने शुभ पातर धरा।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं जजौं दीप शुभ आन।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप कपूर अगर मिलवाय। कीनी भली गन्ध जुत लाय।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं पूजों धूप शुभ आन।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सार बदाम अनूप। खारक पुंगीफल लै भूप।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं पूजों शुभ फल आन।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुह जेय। चरु दीपक फल धूप सुलेय।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं जजौं अरघ पुन्य दान।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ

(चाल जोगीरासे की)

नन्दीश्वर पच्छिम दिस जानों अंजन गिर शुभ थानों।
ताके शीश ऊपर विराजित श्रीजिन मन्दिर जानों॥
जानै को नहीं शक्ति हमारी अरु पूजन मन भाई।
तातैं मन वच काय शुद्ध तें अरघ जजौं शिवदाई॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

याही अंजन गिर की पूरब दिसा वापिका जानौं।
ता मध दधिगिरि ऊपर जिनथल तीरथ अघको हानों॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्छिम अंजन गिरि की पूरब वापिक के मुख भाई।
है रतिकर गिरि जिनथल तापै पूजैं देवा आई॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामुखप्रथरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख ऊपर है रतिकर सुख दानौं।
ताके शीश कहो जिनमन्दिर पाप हरन को थानौं॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम अंजन गिर की दक्षिन वापिका के मध्य जोई।
है दधिगिर तिस नाम सीस पै जिनको थानक सोई॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा

याही वापिक के मुख जानों रतिकर पहिला होई।
तापै जिनजी का है मन्दिर पूजन जोग्य सो सोई॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख ऊपर रतिकर दूजा जानों।
ता ऊपर है श्रीजिनमन्दिर पूजत जे धन मानों।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामिति स्वाहा।

नन्दीश्वर पच्छिम अंजन गिर ता पच्छिम को वापी।
ता मध दधिगिर ऊपर जिन थल पूजैं हरि सुर थापी।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख जानौं पहला रतिकर भाषा।
ताके ऊपर है जिन थानक सुरही पूजें जाखा।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या वापिक के ही मुख जानौं दूजा रतिकर नीका।
ता ही के शिर है जिन थानक पाप हरत है नीका।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर पश्चिम दिश अंजन ताकी उत्तर जानौं।
है वापिक मध्य दधिगिर परवत ऊपर जिनथल मानौं।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख आगे रतिकर परवत पावै।
ता ऊपर जिन थान कहो है सो पूजै सुख दावै।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वापिक इसही के मुख आगे रतिकर गिर सुख थानों।
याके ऊपर है जिनजी को मन्दिर अति सुख दानों।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर पच्छिम दिस त्रयोदश हैं परवत मणि जैसे।
तिन सबपै जिन मन्दिर जानों पापहरण थल ऐसे॥१४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पश्चिमांजननगिरिसम्बन्धित्रयोदशजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

(दोहा)

नन्दीश्वर पच्छिम दिसा, हैं त्रयोदश जिनगेह।
कनक रतनमय सोहनों, जजैं देव कर नेह॥१॥

(वेसरी छन्द)

पच्छिम अंजन गिर को भाई। आदिक हैं तेरह गिर ठाहीं।
तिनपे हैं जे जिनके गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा॥२॥

या पूजा फल दुःखको खोवै। या पूजा फल अघ मल धोवै।
और पुरुष की कथा सुकेहा। तिनपद नमें आनि सुर नेहा॥३॥

पूजा करै हरै भव सोई। पूजाफल चउ गति नहिं होई।
इस पूजन फल सुर द्रुम जेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा॥४॥

जे भव नन्दीश्वर को जावैं। पच्छिम दिसको प्रीत बढ़ावैं।
तहाँ कहे त्रयोदश जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा॥५॥

या पूजा जग में न भमावै। या पूजा फल ज्ञान बढ़ावैं।
पच्छिम नन्दीश्वर जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा॥६॥

इत जिन थान पूज ते ठानैं। तिनकौ तीन भवन बढ़ जानैं।
भावत हैं हम तो जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा॥७॥

ए जिन भवन देखते भाई। लहै पुन्य अघ तुरत नसाई।
पूजै जो भव धरे न देहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा॥८॥

हम भी पूजन को फल चाहैं। अरु पूजन की भावन भावैं।
हम तहाँ जजैं सु औसर है यहाँ। जिन पद नमें आनि सुर नेहा॥९॥

यह नन्दीश्वर पच्छिम थाना। जिन पद नमें तिनै पुन्यवाना।
हीन शक्ति धर लखै न जेहा। जिन पद नमें आन सुर नेहा॥१०॥

सुर जो पूजे बारम्बारा। जो जो अवसर आवै सारा।
मनुष विचारो पहुँचे केहा। जिन पद नमें आन सुर नेहा॥११॥

कब नन्दीश्वर अवसर आवै। जब इस थल हम भावन भावै।
जाकर ही पुन्य पावै जेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा॥१२॥

(सोरठा)

जो वहाँ के जिन थान, पूजों पद वसु द्रव्यतें।
सो लह अविचल ज्ञान, लोकालोक प्रकाशका॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति पश्चिमदिशा पूजा समाप्त

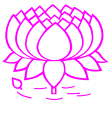

अथ रुचिकद्वीपमध्ये रुचिकगिरिके चारों दिशा चार सिद्धकूट जिनमन्दिर पूजा

अथ स्थापना

(छप्पय छन्द)

रुचिक द्वीप तेरमो, महा सुन्दर द्युति धारी।
ताके बीच सु लोग, रुचिक गिर पर्वत भारी॥
चारों दिश जिन भवन, चार सोहैं सुखदाय।
पूजत इन्द्र सुजाय, देव मिल चतुरनिकाय॥
घेरें द्वीप समुद्र सब, पहुंचन कौन उपाय।
याते आह्वानन सु कर, पूजत जिनवर पाय॥१॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपमध्ये रुचिकगिरि पर्वत पर चारों दिशा चार जिनमन्दिर सिद्धकूटेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टक

(चाल जयमाल की)

क्षीरोदधि सम उज्वल महा नीर ले,
हेम भृङ्गार भर, धार जिन चरण दे।
रुचिक गिर चार दिश, जिनभवन सुर जजैं,
हम सु पूजत यहाँ, ध्यान धर जिन भजैं॥२॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीप के बीच रुचिकगिरि पर्वत के पूर्वदिश।१। दक्षिणदिश।२। पश्चिमदिश।३। उत्तरदिश।४। सिद्धकूटजिनमन्दिरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अधिक घनसार चन्दन, सु गुण सीयरो।
जजत जिन चरण, आताप भवि को हरो। रुचिकगिर० ॥३॥

ॐ ह्रीं०। चन्दनं।

श्वेत शशिकिरश सम, धोय तंदुल धरो,
चरण जिनराज ढिग, पुञ्ज भविजन करो।
रुचिक गिर चार दिश, जिनभवन सुर जजैं,
हम सु पूजत यहां, ध्यान धर जिन भजैं॥४॥

ॐ ह्रीं०। अक्षतं।

कमल अर केतकी, वर्ण सम जातके।
पूज जिनवर सुपद, फूल बहु भाँतिके। रुचिकगिर० ॥५॥

ॐ ह्रीं०। पुष्पं।

सह पकवान घृत खण्ड, मिश्रित लहा।
पूज जिनपद कमल, थाल भर रुच महा। रुचिकगिर० ॥६॥

ॐ ह्रीं०। नैवेद्यं।

रत्नमई दीप तसु, जोत उद्योत है।
करत जिन आरती, मोह क्षय होत है। रुचिकगिर० ॥७॥

ॐ ह्रीं०। दीपं।

धूप दस गन्ध ले, अग्नि बिच खेइए।
हरत वसु कर्म, भविजन चरन सेइए। रुचिकगिर० ॥८॥

ॐ ह्रीं०। धूपं।

फल सो उत्कृष्ट मीठे, सु रस लाइए।
तुरत शिव रमनी वर, मोक्ष फल पाइए। रुचिकगिर० ॥९॥

ॐ ह्रीं०। फलं।

जल सुफल आठ विध, दर्ब सब धोयके।
पूज जिनराज पद, लाल मद खोयकै। रुचिकगिर० ॥१०॥

ॐ ह्रीं०। अर्घं।

प्रत्येकार्घ

(सोरठा)

पूरव दिशा निहार, रुचिक नाम गिर शीश पै।
जिनमन्दिर सुखकार, पूजों आठों दर्व ले।।११।।

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपके पूर्वदिश रुचिकगिरि पर्वत पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिशा सु जान, सैल रुचिकगिरि की कही।
जिनमन्दिर धर ध्यान, पूजों मन वच कायकैं।।१२।।

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपके दक्षिणदिश रुचिकगिरि पर्वत पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश मन लाय, रुचिक जु गिर पर देखिए।
जिनमन्दिर में जाय, श्री जिनवर पद पूजकैं।।१३।।

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपके पश्चिमदिश रुचिकगिरि पर्वत पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश सु विशाल, रुचिक नाम गिरवर तने।
जिनवर भवन त्रिकाल, पूजों भविजन अर्घ सों।।१४।।

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपके उत्तरदिश रुचिकगिरि पर्वत पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं०

अथ जयमाला

(दोहा)

रुचिक द्वीप के बीच में, पर्वत रुचिक विशाल।
जिनमन्दिर चारों दिशा, तिनकी सुन जयमाल।।१५।।

(पद्धरी)

जै जोजन सत्रह खरब गाय, जै अरब सु इकतालिस मिलाय।
जै सत्तर दोय कहे किरोर, जै षोडष सहस सु अधिक जोर।।१६।।

यह रुचिक द्वीप आयान जान, इक इकके भाषे हैं पुरान।
तिस बीच रुचिकगिर परो फेर, चारों दिश आधो दीप घेर।।१७।।

चवरासी सहस कहे उतंग, जोजन कंचन के वरन रंग।
दिश आठ कूट चालिस सु चार, तहाँ रहें देव छप्पन कुमार।।१८।।

जिन गर्भजन्मको समय पाय, जिन माता को सेवैं सु आय।
अर कूट चार गिर के सु अन्त, तहाँ देव चार सु वसो वसंत।।१९।।

जै चारों दिश में कूट चार, है सिद्धकूट तसु नाम सार।
ता पर जिनमन्दिर शोभमान, सब समोसरण रचना समान।।२०।।

तहाँ श्री जिनबिम्ब विराजमान, शतआठ अधिक प्रतिमा प्रमान।
जै रत्नमई द्युति अति विशाल, सुर इन्द्र चरन पूजत त्रिकाल।।२१।।

जै नृत्य करत संगीत सार, बाजे बाजत अनहद अपार।
जै जिनगुन गावैं अमर नार, सुर ताल मधुर ध्वनिको संवार।।२२।।

जै जै जगतारन जै जिनेश, तुम चरण कमल सेवत सुरेश।
हम करत बिनती नमत भाल, भव भव तुम सेव करैं सुलाल।।२३।।

(धत्ता–दोहा)

रुचिक द्वीप जिनभवन की, पूरन यह जयमाल।
जो नर वांचैं भाव धर, तिनके भाग विशाल।।२४।।

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपमध्ये रुचिकगिर पर्वतके चारों दिशा चार जिनमन्दिर सिद्धकूटेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथार्शीवादः ।।

(कुसुमलता छन्द)

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम, ताको पाठ पढ़ै मन लाय।
जाको पुन्यतनी अति महिमा, वरणन को कर सके बनाय।।
ताके पुत्र पौत्र अरु संपत, बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय।
यह भव जस परभव सुखदाई, सुर नर पद लहि शिवपुर जाय।।२५।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

इति श्री रुचिकद्वीपमध्ये रुचिकगिरि पर्वतके चारों दिशा चार जिनमन्दिर सिद्धकूट विराजमान ताकी पूजा सम्पूर्णम्।